ISSN No. 2231-0045 VOL.II* ISSUE-I*AUGUST-2013
Periodic Research

अली सरदार जाफरी का हिन्दी साहित्य में योगदान

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,हिन्दी
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह
महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
amitshukla415@gmail .com

सारांश

कवि रत्न अली सरदार जाफरी उर्दू शायरों में भारतीय उपमहाद्वीप कें ख्याति प्राप्त शायर थे। वे प्रगतिशील लेखक आन्दोलन से जुड़े हुये थे और इस आन्दोलन के मुख्य प्रकाश स्तम्भों में से थे। जाफरी जी ने सदैव जुल्म के खिलाफ रचनाएं लिखी वे शायरी में कला जीवन के लिए मानकर चले और शायरी कटटरवाद आर्थिक शोषण सामाजिक यंत्रणा के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल किये जाने के पक्ष का सदैव समर्थन किया।जाफरी साहब उच्च कोटि के समालोचक और अनुवादक की हैसियत से भो ख्याति प्राप्त की। उनकी साहित्य तथा आलोचना सम्बन्धी किताबों में तरक्की–तरक्की पसन्द, अदब लखनऊ की पॉच रातें तथा पैगम्बरान–ए– सुखन मशहूर हैं। सरदार जाफरी ने लगभग 87 वर्ष की आयु पाई और सारा जीवन कर्मशीलता में तथा व्यस्तता में व्यतीत किया। उन्होनें कुछ फिल्मों के लिए संवाद भी लिखे। कहानियों और कुछ वृत्ति चित्रों के आलेख भी लिखे साथ ही पत्र और पत्रिकायें संपादित की तथा शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुडे रहे व दुनिया के अनेक देशों की यात्राएं करते रहे। इस प्रकार जाफरी साहब का सम्पूर्ण जीवन एक रोमांच पूर्ण जीवन यात्रा रहा है। जनाब अली सरदार जाफरी की लोकप्रियता का एक रहस्य यह भी है कि उनकी कविता रूसी, उजवेकी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रान्सीसी अरबी, तथा कई भारतीय भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। जाफरी साहब उर्दू के साथ अंग्रेजी के भी विद्वान थे उन्होंने साहित्य समाज तथा राजनीति सम्बन्धी अनेक विषयों पर टिप्पणियां आलेख और कालम भी बड़ी संख्या में लिखे है। उनके आलेख लालकिला, साबरमती आश्रम, और तीनमूर्ति निवास पर आधारित लोकप्रिय ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम के अन्तर्गत ह। अली सरदार जाफरी ने साहित्य के माध्यम से भारत की एकता, अखण्ड़ता व सदभावना के बीज बोये थे वे आज के मुस्लिम साहित्यकारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से जनमानस को आवाज दी और जीवन की सच्चाई को कलमबद्ध किया। साहित्य के लिए दिये गये अली सरदार जाफरी के योगदान का यह देश ऋणी रहेगा और साहित्य युगों–युगों तक देश के लिए प्रासांगिक रहने के साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत भी।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक संस्था, साहित्य युग, साम्प्रदायिकता

प्रस्तावना

भारतवर्ष एक विशाल देश है जहाँ अनेक जाति, धर्म व सम्प्रदाय के व्यक्ति निवास करते हैं अनेक भाषा बोलते हैं, व अनेक प्रकार की वेश–भूषा धारण करते हैं भारतवर्ष में विभिन्न धर्मों को मानने वाले व्यक्ति शताब्दियों से साथ–साथ रहते चले आ रहे हैं, लेकिन सभी में एकता और भ्रातृत्व भावना का पूर्णतया विकास जैसा होना चाहिए वैसा 21वीं सदी में इस वर्तमान युग में भी नही दिखाई दे रहा हैं। अब भी आए दिन साम्प्रदायिक दंगे, आतंकवाद का भयावह रूप देश के वातावरण को विक्षुब्ध बना देता हैं। देश के इस तरह के वातावरण को सुधारने के लिए बुद्धि जीवियों ओर साहित्यकारों के प्रयत्न की अत्यंत आवश्यकता महसूस की जाती है ऐसे भ्रातृत्व भावना, भावात्मक एकता व सांस्कृतिक एकता का प्रसार करने वाले महापुरूषों के जीवनचरित्रों को उजागर करके प्रस्तुत करना देश के लिए बड़े पुण्य की बात हो सकती हैं। देश की सांस्कृतिक, राष्ट्रीय व भावात्मक एकता की भावना का प्रसार करने के अनेक शासकों, सन्त सूफी एवं भक्त कवियों तथा महात्माओं ने अनेक स्तुत्य प्रयत्न किए हैं। आज के वर्तमान समय के साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा के इस दौर में इस बात पर विश्वास कर पाना मुश्किल हो सकता है कि चार सौ साल पहल भारतभूमि पर एक ऐसा मसलमान मनस्वी पैदा हुआ था जिसका हिन्दी साहित्य में योगदान अविस्मरणीय है। सरदार जाफरी जी का जन्म 29 नवम्बर 1931 को बलराम पुर गोंडा (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। ये एक साधरण मध्यवर्गीय मुसलमान घराने में पैदा हुए थे जिनके घर का वातावरण खालिस धार्मिक था और ऐसे

मुस्लिम घरानों में' अनीस के मर्सिये'' पढे जाते थे और साथ ही इन मुस्लिम परिवारों में रामायण और महाभारत भी हिन्दू धरानों की तरह पढ़े जाते थे, इन सबका प्रभाव जाफरी, पर पड़ा। जाफरी बलरामपुर से अपनी हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, उच्च शिक्षा के लिए मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ चले गये, वे अपने छात्र जीवन में ही छात्र नेता बन गये और विद्यार्थी आन्दोलनों में गहराई के साथ भाग लेने लगे। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की एक हड़ताल कराने के कारण वे विश्वविद्यालय से निकाल दिए गये और फिर वे ऐग्लो–ऐरिनिक कालेज दिल्ली चले गये जहॉ से अपनी बी.ए. की डिग्री प्राप्त की और लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। इसके बाद वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गये तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान साम्राज्यवादी विरोध के चलते कई बार जेल गये और सन् 1992 में वे मुम्बई आकर बस गये तथा मृत्युपर्यन्त वही रहे।[1] सरदार जाफरी दबे कुचले वर्ग के लोगों को अपने कलम के माध्यम से आजादी और जीवन की सच्चाई के लिए निरन्तर प्रेरित करते रहे।

कवि रत्न अली सरदार जाफरी उर्दू शायरों में भारतीय उपमहाद्वीप कें ख्याति प्राप्त शायर थे। वे प्रगतिशील लेखक आन्दोलन से जुड़े हुये थे और इस आन्दोलन के मुख्य प्रकाश स्तम्भों में से थे। उनके साथियों में मजाज, कृष्णचन्दर, राजेन्द्र सिंह बेदी, स्मत चुगताई, मजरूह सुल्तानपुरी, और कैफी आजमी आदि थे। ये सभी एक बड़े परिवार की तरह थ। जाफरी जी ने सदैव जुल्म के खिलाफ रचनाएं लिखी वे शायरी में कला जीवन के लिए मानकर चले और शायरी कटटरवाद आर्थिक शोषण सामाजिक यंत्रणा के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल किये जाने के पक्ष का सदैव समर्थन किया। जाफरी की निगाह में शायरी दिल बहलाने की चोज नहीं बल्कि जुल्म के खिलाफ जन–मानस में जागरूकता का संदेश देने का माध्यम रही आजादी के लिए उन्होंने शायरी लिखी और जेल गये और आजादी के बाद देश के बॅटवारे को लेकर और अन्याय के खिलाफ लिखा तथा जेल गए। जेल में भी इनकी कलम चलती रही, उन्होने मेरा सफर में लिखा है– मैं यहॉ फिर आऊगा बच्चों के दहन से बोलूंगा, चिडियों की जुबां से गाऊगा। जाफरी का यह ख्वाब अभी अधूरा है और भावी पीढ़ी को उनके स्वप्न को पूर्ण करना है।

प्रख्यात कवि स्वर्गीय अली सरदार जाफरो ने अपनी आत्मकथा में लिखा है :

''मुझ इन्सानी हाथ बड़े खूबसूरत मालुम होते हैं, इनके कंपन में संगीत है और मौन मे कविता। उनकी उंगलियों से सृजन की गंगा बहती है। ये स्वर्गदूत है जो मन और मस्तिष्क की उंचाइयों से आकाशवाणी लेकर कागज के स्तर पर उतरते हैं और उस पर अपने अमिट निशान छोड़ जाते हैं। इन कागदों को दुनिया काव्य और कहानी आलेख और पुस्तक कह कर ऑखों से लगाती है और इनसे आत्मिक सांत्वना प्राप्त करती है।"

उर्दू के सुविख्यात कवि और प्रतिष्ठित भारतीय साहित्यकार अली सरदार जाफरी को 1997 ई. का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया था। साथ ही उन्हें सोवियत लैण्ड पुरस्कार, उत्तरप्रदेश का उर्दू अकादमी पुरस्कार, इकबाल सम्मान तथा पद्मश्री से भी नवाजा गया। भारतीय साहित्य को जिन आधुनिक साहित्यकारों ने एक दिशा प्रदान की है उनमें अली सरदार जाफरी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जाफरी जी उन बुद्धिजोवियों ओर कलाकारों में रहे हैं जिन्हें भारत के विभिन्न वंर्गों में स्नेह और सम्मान की नजर से देखा जाता था, यहॉ तक की जाफरी की विचाराधारा और सृजन शैली से मतभेद रखने वाले भी भारतीय साहित्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उनके द्वारा की गई सेवाओं को तहे दिल से स्वीकार करते हैं। अली सरदार जाफरी की पहली पुस्तक 'मंजिल' नाम से प्रकाशित हुई थी जो कहानी संग्रह था, इसका प्रथम संस्करण 1940 में प्रकाशित हुआ, इसके बाद सन् 1943 में उनका नाटक 'प्यार' नाम से छपा एवं उनकी शायरी का पहला दीवान, 'परवाज' नाम से सन् 1943 में छपा उन्होंने अपनी शायरी जेल में भी लिखना बन्द नहीं किया जिनमे 'नीद' 'पत्थर की दीवार', अवध की खाक ए–हसी, 'एशिया जाग उठा' आदि मशहूर है। 'एशिया जाग उठा' जाफरी की लम्बी कविता है जिसमें उन्होंने लिखा है :

'ये शायरी शायरी नहीं है–रजज की आवाज, बादलों की गरज है तूफान की सदाह कि जिसको सुन कर पहाड आते हैं सब्ज माथों पे बर्फ की कलगियां लगाए धुंए के बालों में सुर्ख शोलों के हार गूथें समंदर आते हैं झाग की झाझने बजाते हवाएं आती हैं अपने झोंको की नीलगू गोफने घटाएं आती हैं, बिजलियों पर सवार होकर भारतीय दर्शन में पाणिवाद का अत्यन्त महत्व हैं जिसका दिग्दर्शन महाभारत में होता है।"

इस दर्शन के अुनसार इंसान के दो हाथ ही उसक सार–सर्वस्व हैं, और गीता में जिस कर्म– सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है वह पाणिवाद ही है सरदार जाफरी भी अपनी कविता मे हाथों का बयान लिखते हैं–

वो हाथ आते हैं जो हलों को चला रहे हैं
वो हाथ आते हैं जो मशीनों को छू रहे हैं
वो हाथ आते है जिनमें झंडे उगे हुए है
वो हाथ आते हैं जो कहानी सुना रहे हैं
वो मेरे सिर पे सियाह रात की परछाई है,
मेरे हाथों में हे सूरज का छलकता हुआ जाय''[2]

कवि जाफरी के शब्दों में समाज को बदलने का साधन कविता है, उन्होंने कहा है– ''वह न ही कुल्हाडी की तरह वृक्ष काट सकता है और न मनुष्य के हाथों की तरह मिट्टी से प्याले बना सकता है। वह पत्थर से बुत नहीं तराशता बल्कि भावनाओं तथा अन्य भूर्तियों के नये नये चित्र बनाता है। वह पहले मनुष्य की भावनाओं पर प्रभावशील होता है और इस प्रकार उसमें अतिरिक्त परिवर्तन उत्पन्न करता है, और फिर उस मनुष्य के द्वारा वातावरण तथा समाज को बदलता है। यही कारण है जाफरी की कविता की जनप्रियता का, जो उनके व्यक्तित्व को उभारता है। उनकी कविता का मूल स्वर लोकतांत्रिक है जिसमें लोक संस्कारों की मानवीय पीड़ा और करूणा के बीच निहित हैं सहजता उनकी कविता की एक प्रमुख

विशेषता है और उनका रचना संसार जन–जीवन के संघर्षों की अभिव्यक्ति से विनिर्मित है। यही वजह है की जाफरी की निगाह, जिन्दगी के असली मर्म को तलाश लेती है उनका विश्वास है कि दिल से उतरी कविता ही सच्चे दिल में उतरती है वास्तव में सच्चा लेखक वही है जो स्थितियों से कटकर नहीं बल्कि उनका सामाधान अपने कलम के बल पर अपनी रचनाओं में निकाल लेता है, यही कारण है कि लेखन के लिए वातावरण का सर्वाधिक महत्व है और वह लेखन संभवतः लेखन नही है जिनमे परिस्थितियों से मुड़ने अथवा भाग जाने का चित्रण हो। जटिल से जटिल जीवन की परिस्थितियों को आत्मसात कर उन्हें अपनी रचना में जिन्दगी से जोड़ते हुए चित्रण करना ही लेखकीय सफलता है। वास्तव में सरदार जाफरी भारत के एक ऐसे महान शायर है जिन्होंने अपने अनुभवों द्वारा यह रहस्य जाना कि संसार में व्यक्तियों तथा समुदायों की पराजय तो हो सकती है किन्तु मानव अजेय है जाफरी के इस विश्वास को ही उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। उनकी शायरी में किसी प्रकार की निराशा तथा अवसन्नता का चित्रण नहीं मिलता बल्कि वो आशावाद से सदैव भरी रहती है। सरदार जाफरी भारतीय राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के समर्थक थे।3 वे सच्चे अर्थों में अग्नि–पथ के यात्री थे, जो न कभी थके, कभी न थमे तथा कभी न झुके और चलते रहे अग्निपथ पर अविराम। इंसान जब स्वप्न देखता है तभी तक उसमें आशंका का संचार होता है और इंसान जब सपने देखना छोड देता है तो वह ना उम्मीदी के बीच घिर जाता है उसके जीवन की समरसता समाप्त होने लगती है। जहा तक सरदार जाफरी की शायरी की बात है, तो स्पष्ट है कि जाफरी जी देश के लिए स्वप्न देखते रहे, और उन्ही सपनों की ताकत है कि वे उर्दू शायरी को एक नई समझ तथा विचार की नई दिशा दी। उन्होंने शायरी को आदमी से निकालकर आम आदमी की जिन्दगी से जोड़ा उसे गॉव कारखानों और खेतों तक पहुचाया। उन्होंने मिल–मजदूरों के हांथों पर नज्म लिखी, काम करने वाली महिलाओं और गली के बच्चों तथा किसान के माथे पर झलकते पसीनों पर भी लिखा वास्तव में जाफरी के पूर्व पहले कभी उर्दू शायरी के विषय नहीं बने थे और उनके रूप में उर्दू साहित्य ने सबसे पहले जन जीवन की हकीकत के बीसवीं सदी में उनकी रचनाओं के माध्यम से हुआ।

जाफरी जी की कुछ लोकप्रिय नजमें हैं–

निवाला–

''मॉ है रेशम को कारखाने में,
बाप मसरूप सूती मिल में है,
कोख से मां की जब से निकला है,
बच्चा खोली के काले दिल में है,
जब निकल कर यहॉ से जावेगा,
अपने मजबूर पेट के खातिर,
भूक सरमायें की बढायेगा,
हाथ सोने के फूल उगलेंगे,
जिस्म चांदी का धन लुटायेगा,
खिड़कियां होगी बैंग की रोशन,
खून उस का दिये जलायेगा,
ये जो नन्हा ह भोला भाला है,
खूनी सरमाये का निवाला है–
पूछती हैं ये उसकी खामोशी,
कोई मुझ को बचाने वाला है''

और तभी तो शायर अपनी रचनाओं में मानव प्रेम की मशाल जला सका है और कह सका है–

''नया चश्मा है पत्थर के शिगाफों से उबलने को,
जमाना किस तरह बेताब है करवट बदलने को,''

कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ–सम्बन्धों के संकुचित दायरे से ऊपर उठाकर विस्तृत जगत में ले आती हे। और तभी तो भारतीय मनीषा साहित्यकार के लिए कहा गया है–

न स शब्दो न तद् वाक्यम्,
न स न्यायों न स कला,
जायते यत् काव्यां कला,
जायते पत् काव्यां अहों,
यारों महान कवैं।

पश्चिमी जगत में भी कवि को समाज की सहज विधिकर्ता (लेजिस्लेटर) कहा जाता है कवि की इस महान भूमिका का निर्वहन कराकर जाफरी ने बहुत कुछ अपनी रचनाओं में किया हैं उन्होंने भी एक शायर के मंगलमय शुभ उद्देश्य का चित्रण अपने नज्म में किया है–

मैं हूँ शादियों का तफक्कुर, मैं हूँ करनों का ख्याल,
मैं हूँ हम आगोश अजल से, मै अबद से हम–किनार,
मेरे नगमे कैदे–माहो– सालों से आजाद है,
मरे हांथों में है लाकानी तमन्ना का सितार,
नक्शें मायूसी में भर देता हूँ उम्मीदों का रंग,
मै अदा करता हूँ शाखे–आरजू को बार–बार,
चुन लिए हैं बागे इन्सानी से अरमानो के फूल,
जो महकते ही रहेगे मैने गूँधे है वो हार,
आर्जी जलवों को दी है ताबिशे–हुस्नों–दबाम,
मेरी नजरों से है रौशन आदमी की रहगुजार।।[3]

हमारे देश की कला और संस्कृति के निर्माण में उर्दू भाषा और साहित्य का बड़ा हाथ रहा है उर्दू के रंगा रंग फूलो ने भारत के सौंदर्य में चार चॉद लगा दिये है और जाफरी जैसे उर्दू भाषा में लिखने वाले शायर की रचनाओं में इस समूचे देश के दिल की धडकन सुनाई देती हैं उर्दू के सच्चे साहित्यकारों ने इस देश की गंगा जमुनी सभ्यता और संस्कृति, लोक कथाओं, रीति–रिवाजों तथा विश्वासों को अपनी रचना का वर्ण्य विषय बनाया है। भारतीय संस्कृति के विकास में जाफरी का योदान कुछ कम नही रहा। महाकवि इकबाल ने भी कहा था–

''पिरोना एक ही तसबीह मे इन बिखरे दानों को तब उनके कहने का भाव यह रहा कि उस महादेश की विविधताओं को एक सूत्र में पिरोना है क्योंकि भारतवासियों की एकता उनकी विविधता में निहित है। हमे भारत को अपने दिल के अन्दर बसाना ह और जब भारत हमारे लहू में रच उठेगा तभी संगठित राष्ट्रीयता का स्वप्न साकार होगा। इन्सान की मुक्ति आपसी पम और भाईचारे में है। राष्टोयता एवं राष्ट्रीय एकता के गीत गाने वाले उर्दू

शायरों में अली सरदार जाफरी अगण्य पंक्तियों में गिने जा सकते है। मानव को अजेय गौरव से चित्रित करना कवि का काम है। स्व. सरदार जाफरी अपने देश की हालत पर चिन्तित रहा करते थे उनका कहना था कि आज के राज नेताओं ने ही नही उन लेखकों ने भी जो किसी न किसी रूप से सन्तान से जुड हुये है। अपने दिमाग को गिरवी रख दिए हैं।

किसी देश के लिए यह शुभ लक्षण नहीं है सरदार जाफरी जी से जब एक साक्षात्कार में पूछा गया कि आज कहां सकून पाते है तब उन्होंने अपना एक शेर सुनाते हुये कहा–

''इसी उम्मीद में बेताबी–ए–जो बढती जाती हैं
सुकून ए दिल जहॉ मुमकिन शायद वो मुकाम आए''–
''जाफरी जी ने कहा–कि सुकुन–ए–दिन वह कभी नहीं आता
और जब आयेगा वह मौत होगी शायर की''।

वह इसलिए कि तलब खत्म हो जाएगी। हर व्यक्ति के सुकून की सोच कि अलग–अलग होती है जैसे एक जुआरी का सुकुन यह कि वह हर हांथ को जीते और एक अच्छे आदमी का सुकून यह है कि उसके पास जो कुछ है वह सब बाट दे। देश के राजनीतिज्ञों को जाफरी गम्भीरता से नहीं लेते थे। उनका कहना था कि आजादी की लड़ाई में कुर्बानी का जज्बा था। उस समय के राजनेताओं में महात्मागॉधी, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद इन सबके दिल बहुत बडे थे। वे इंसान की कद्र करना जानते थे और आज की राजनीति में कुर्बानी का जज्बा नही है अब तो वह पैसा कमाने का साधन बन गया है और देश की राजनीति में कैसे–केसे लोग पहुंच कर अपना सिक्का जमा चुके है यह सारा देश जानता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने भविष्य का जो एक सपना देखा था वह सपना इतना खूबसूरत है कि वह हजार वर्ष तक नही आयेगा। ऐसा लगता है कि चारों तरफ से हजारों सूरज उग रहे हैं निकल रहे है अब चारों तरफ डूब रहे हैं। समय की धारा नदी की तरह सीधी नहीं बहती है। जैसे नदी की एक लहर नीचे जाती है फिर ऊपर उठती है ठीक उसी तरह स्वतंत्रता के पूर्व जब यह देश आजादी के लिए लड़ रहा था उसकी धारा ऊपर उठ रही थी और अब नीचे चली गई है किन्तु ऐसा विश्वास है एक समय बाद वह फिर उठेगी।[4] सचमुच जाफरी के गद्य में मानवीय संघर्षों की गाथा का जिक्र है इसीलिए तो महाकवि निराला ने गद्य को जीवन संग्राम की भाषा कहा था। सरदार जाफरी जी ने अपने जिन्दगी का आधा हिस्सा सफर में व्यतीत किया कभी कभी वो वर्ष भर सफर पर ही रहते थे। उन्होनें रूस की अनेको बार यात्रा की थी। ऐसी ही एक यात्रा का जिक्र प्रख्यात साहित्यकार अमृता प्रीतम जी ने अपनी आत्मकथा (रसीदी टिकट में किया है– '' ताशकंद में आजकल हिन्दुस्तान से उर्दू कवि अली सरदार जाफरी भी आये हुए है आज अचानक मुलाकात हो गई तो जुल्फिया ने उन्हें अपने घर दावत पर बुला लिया। जाफरी साहब ने जुल्फिया के नाम की व्याख्या करते हुये कहा– जुल्फ शब्द को हिन्दी में अलक कहते हैं और इसलिए मै उसका भारतीयकरण करते हुए जो टोस्ट मुझे पेश किया गया है उसे अलका कुमारी के नाम पेश करता हूॅ। जाफरी जी के कुछ खास शेर जो पसन्द किये जाते हैं दृष्टव्य हैं–

''एक साहिल है कि उभरा है भंवर की गोद से,
एक किश्ती है कि तूफानों से टकराई है आज,
इश्क का नगमा जुनू के साज पर गाते है हम,
अपने गम की आंच से पत्थर को पिघलाते है हम,
जग उठते हैं तो सूली पर भी नींद आती नहीं,
वक्त पड़ जाये तो अंगारों पे सो जाते है हम''।

उर्दू के नये कलाकारों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जाफरी जी ने कभी कहा था कि आज जो थोड़ा लिख रहा है कल बहुत लिख सकता है मै उर्दू के नये कालाकारों के भविष्य पर चिन्तित नही हूॅ किन्तु मेरी सबसे बडी चिन्ता है आदमी के लिये क्योंकि इससे बडा जीनियस पैदा नही हुआ और इससे बड़ा ऋषि, मुनि भी पैदा नही हुआ। आदमी न ज्यादा बड़ा जानवर भी नहीं हुआ। क्योंकि हमने देखा है बच्चों को 1947–48 में भालों और तलवारों के ऊपर उछालते हुए यह शैतानियत नहीं तो क्या है।

महाकवि इकबाल ने कहा था कि मंजिल पर पहुंच कर आदमी के लक्ष्य का अन्त नहीं हो जाता सितारों के आगे जहॉ और भी है यही तो आदमी की प्यास है आदमी के प्यास का बुझना उसका अन्त होना है। हमारी जिन्दगी में एक प्यास बुझती है और नदी प्यास जन्म लेती है मिलन और उसके बाद बिछड़ना और बिछुड़नें के बाद नया मिलाप और मिलाप के बाद फिर बिछुडनें की इच्छा और सच पूछिये तो विछड़ने की इच्छा सब लोग समझ नहीं पाते।[5]

गालिब ने कहा है–

''खुश्क होते नही बसर में यू मर नहीं जाते,
आई सब हिजरा की तमका मरे आगे''
जब हम मिले अपने महबूब से तो मारे खुशी के दम निकल गया,
और उस वक्त सोचा कि काश न मिले होते,
और अभी तक हमारी आरजू रहती''।।

कविवर जाफरी भी अपने एक ''कतआ'' में कहते है'–

''नसीमें सुबह तसव्वुर ये किस तरफ से चली,
कि मेरे दिल में चमन–दर– किनार आती है,
कहीं मिले तो मेरे गुल–बदन से कह देना,
तेरे ख्याल से बू–ए बहार आती है''।[6]

जिन्दगी में सुख–दख न जाने कितने अवसर आते रहते है कटु और मधुर नर्म और गर्म इसी के सम्मिश्रण का नाम ही तो जीवन है। जाफरी के जीवन में भी सुख–दुख के अनेक अवसर आये थे वेदना की अनुभूति के वक्त कवि ने लिखा होगा–

''गम का सितारा''–

''मेरी वादी में वो इक दिन यूं ही आ निकली थी,
रंग ओर नूर का बहता हुआ धारा बनकर,
महफिलें शौक में इक धूम मचा दी उसने,
खलवते–दिल में रही अंजुमन–आरा बनकर,
शोला–ए–इश्क सरे–अर्श को जब छूने लगा,
उड़ गई वो मेरे सीने से शरारा बनकर,
और अब मेरे तसव्वुर का उफक रोशन है,

वो चमकतो है, जहॉ गम का सितारा बनकर''।[7]

अली जाफरी सन् 1936 में प्रगतिवादी आन्दोलन के साथ–जुड़ गये किन्तु कालान्तर में उनकी चेतना और विचारधारा में बदलाव आने के कारण तथा उनके वैचारिक और और आध्यात्मिक स्तर पर मध्यकालीन कवियों से लेकर आधुनिक कवियों के अध्ययन के कारण उन्हें प्रगतिशील आन्दोलन में कमजोरियां नजर आने लगी अतः उन्होने उससे अपना सम्बन्ध कम करना प्रारम्भ कर दिया और दीवान–ए–गालिब, दीवान–ए–मीर कबीर और प्रेमबानी जैसे सुप्रसिद्ध ग्रन्थों के संपादन में वे लग गये। इन ग्रन्थों का स्वागत हिन्दू और उर्दू दोनों क्षत्रों में किया गया। कबीर बानी की भूमिका में जाफरी जी लिखते है–महान कविता की यह आनोखी विशेषता है कि बहुधा वे अपने रचायिता से असम्बद्ध हो जाती है। फिर उस अस्तित्व से कवि का अस्तित्व पहचाना जाता है क्योंकि उसके जीवन के हालात बीते हुये समय के धुधलके मे खो जाते हैं और घटनायें कहानियों का रूप धारण कर लेती है। कबीर के विषय मे भी यह सत्य है अपनी भूमिका में कबीर के पदों की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं– इस्लाम में इंसान की जिम्मेदारियों को दो हिस्सों में बांटा गया है एक खुदा का हक, दूसरा बन्दों का हक।

इबादत (उपासना) खुदा का हक है और सामाजिक जिम्मेदारियां बन्दों का हक खुदा के गुनहगार को जिसने हके इबादत अदा नहीं किया, खुदा माफ कर सकता है लेकिन बंदो के गुनहगार को जिसने अपने सगे सम्बन्धियों, पड़ोसियों, देशवासियों या इस संसार में रहने वाल दूसरे इंसान का हक अदा नहीं किया उसको खुदा माफ नही करता। सिर्फ बन्दे ही उसे माफ कर सकते हैं, उसके बाद रहमत के दरवाजे खुलेगें। इसलिए कबीर ने दोनों हकों का जिक्र किया है–

''सरगुन की सेवा करो, निरगुन का करो ज्ञान
निरगुन सरगुन के परे, तहीं हमारा ध्यान''[8]

कबीर, मीर, गालिब और इकबाल ने एक आन्तरिक रिश्ते की पहचान उर्द साहित्य में सबसे पहले जाफरी ने ही की । वास्तव में वे जिन्दगी से जुड शायर हैं। उन्होंने कबीर वानी में यह दिखलाने की कोशिश की है कि कबीर की आस्था इस्लामी आस्थाओं की भूमि से उठकर वेदान्त के शून्य आकाश में भी पहच जाती है। और तब उनकी चेतना निर्गुण और सगुण से भी ऊंची हो जाती है किन्तु कबीर तो अद्भुत व्यक्तित्व के महापुरूष थे वे कभी –कभी अपनी रचनाओं में इस्लामी शब्दों का प्रयोग करते हैं और फिर हिन्दू पद्धति अपना लेते है जैसे ''नदी आखों मे मौजूद है, काले और सफेद तिलों के बीच में एक तारा है जिसमें लाखों सूरज उदय होते हैं। मगर रस हजार रंग अन्दाज के अन्दर अभीष्ट है एक ही शब्द जो एक शब्द प्रेम मे समा जाता है और यही कबीर की विचारधारा का केन्द्रीय रहस्य है। उनका प्रेम हिन्दू मुसलमान दानों से ऊपर उठकर समस्त मानव जाति के लिए है यही कारण था कि जैसे अद्वैत के अनन्त सागर की लहरे अपने अलग–अलग नाम नहीं रख सकती इसीलिए कबीर ने हिन्दू या मुस्लिम नाम धारण करने से इन्कार कर दिया– उन्होंने कहा – मै न हिन्दू हू न मुसलमान मै तो गैब के खेल के अन्दर पाच तत्व का पुतला हूँ–

हिन्दू कहो तो मै नहीं, मुसलमान भी नाही,
पाच तत्व का पूतला, गबी खेले माहीं।।

कबीर बानी की तरह दीवान–ए– गालिब और दीवान–ए–मीर भी जाफरी की प्रसिद्ध पुस्तके है। जाफरी जी ने भीर के लिए कहा था–

शाअिर को खुदा का शिष्य भी कहा गया है और पैगम्बर का भी स्थान दिया गया, लेकिन मीर तकी मीर अकेले शायर ह, जिन्होने खुदा–ए–सुखन (शायरी का खुदा) कहा जाता है। आम लोकप्रियता के विचार से यद्यपि गालिब और इकबाल मीर से कही आगे है पर मीर के शेर लोगों के जवान पर ज्यादा है। उनका प्रभाव वर्तमान शायरी पर अधिक स्पष्ट है यही कारण था कि हर हाल में बडे से बड़े शायर ने मीर का नाम आते ही अपना सर झुका लिया है।[9]

जनाब अली सरदार जाफरी की लोकप्रियता का एक रहस्य यह भी है कि उनकी कविता रूसी, उजवेकी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रान्सीसी अरबी, तथा कई भारतीय भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। जाफरी साहब उर्दू के साथ अंग्रेजी के भी विद्वान थे उन्होंने साहित्य समाज तथा राजनीति सम्बन्धी अनेक विषयों पर टिप्पणियां आलेख और कालम भी बड़ी संख्या में लिखे है। उनके आलेख लालकिला, साबरमती आश्रम, और तीनमूर्ति निवास पर आधारित लोकप्रिय ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम के अन्तर्गत है।

जाफरी साहब उच्च कोटि के समालोचक और अनुवादक की हैसियत से भी ख्याति प्राप्त की । उनकी साहित्य तथा आलोचना सम्बन्धी किताबों में तरक्की–तरक्की पसन्द, अदब लखनऊ की पॉच रातें तथा पैगम्बरान–ए– सुखन मशहूर हैं। सरदार जाफरी ने लगभग 87 वर्ष की आयु पाई और सारा जीवन कर्मशीलता में तथा व्यस्तता में व्यतीत किया। उन्होनें कुछ फिल्मों के लिए संवाद भी लिखे। कहानियों और कुछ वृत्ति चित्रों के आलेख भी लिखे साथ ही पत्र और पत्रिकायें संपादित की तथा शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुडे रहे व दुनिया के अनेक देशों की यात्राएं करते रहे। इस प्रकार जाफरी सहाब का सम्पूर्ण जीवन एक रोमांच पूर्ण जीवन यात्रा रहा है।[10] उनकी आवाज देश की सीमाओं से बाहर और संसार की अनेक भाषाओं के माध्यम से बहुत दूर तक सुनी जाती रही है। उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू थे वे एकसाथ एक कवि एक नाटककार, और एक कहानीकार एक फिल्म निर्माता, एक क्रान्तिकारी और एक सामाजिक कार्यकर्ता आदि अनेक रूपों मे उनका व्यक्त्वि सामने आता है। अली सरदार जाफरी ने वर्षों पूर्व लिखा था आबला–पा'– जिसमें वे कहते हैं–दरखतों के साये मे बैठे हुये इन्सानों तुम तो वक्त के मेहमान हो और क्या कभी तुमने यह सोचा है कि किस देश से आये हो और किस देश को जाना है? फिर वे इस कविता में प्रश्न पूछते हैं, कि वक्त के मेहमानों, देखों दर्द का सहरा है, इक धूप का जंगल है, अथवा प्यास का दरिया है। जरा सोचों तो दरिया के परे क्या है

पत्थर है कि चश्मा है नगमा है नाला है शबनम है कि शोला है, फिर शायर खुद ही उत्तर देता है कि शायद कोई शाहिर है जो डूबते सूरज के दरवाजे पर बैठा है महान शायर जाफरी का विश्वास था–

कल सुबह के दामन में तुम होगे न हम होगे बस रेत के सीने में कुछ नक्श–ए–कदम होगें। ऐसा नामी गिरामी शायर मुम्बई में बीमार रहन के पश्चात इस दुनिया से चल बसे।[11]

निष्कर्ष यह है कि अली सरदार जाफरी ने साहित्य के माध्यम से भारत की एकता, अखण्ड़ता व सदभावना के बीज बोये थे वे आज के मुस्लिम साहित्यकारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। उनके इस साहित्यिक योगदान को भुलाया नही जा सकता। उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से जनमानस को आवाज दी और जीवन की सच्चाई को कलमबद्ध किया। साहित्य के लिए दिये गये अली सरदार जाफरी के योगदान का यह देश ऋणी रहेगा और साहित्य युगों–युगों तक देश के लिए प्रासांगिक रहने के साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत भी।

संदर्भ –सूची

1. अग्रवाल, गिरिराजशरण–शोध दिशा, इलाहाबाद , सन 1990,पृष्ठ , 64, 65
2 शर्मा, देवेन्द्र– हिन्दी अनुशीलन ,भारतीय हिन्दी परिषद इलाहाबाद, सन, 1999 पृष्ठ , 38
3. भाटिया रचना–सब कुछ जानने पर भी जानिये, साहित्य अमृत पत्रिका, मासिक अंक 05 जनवरी 2010 आशिफ अली रोड नई दिल्ली पृष्ठ 55, 57
4. क्षेत्रिय, प्रभाकर– (वक्तव्य) अक्षरा पत्रिका, भोपाल, अक्टूबर,–दिसम्बर, 2006
5. हिन्दुस्तान अक्टूबर 1971 संपादकीय पृष्ठ।
6. शक्ल, विमलेश–सृजन विमर्श संभाषा की शोध पत्रिका 320 इन्द्रपुरी इन्दौर अंक 04 05 जुलाई–दिसंबर 2009, पृष्ठ 26
7. द्विवेदी,विनय–विन्ध्य भारती त्रैमासिक शोध पत्रिका, मई 2008 अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा पृष्ठ–15
8. मुस्लिम कवि, वीणा मासिक पत्रिका अगस्त 2008 रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग इन्दौर पृष्ठ–22
9. अमर उजाला समाचार पत्र इलाहाबाद, 26 फरवरी 2009 पृ0 8
10.रचना अंक 63 दिसम्बर 2006 हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ0 89
11.विजय–मूस्लिम कवि और उनका साहित्य, छत्तीसगढ़ विवक, सितम्बर, 2009 भिलाई, पृ. 46
12.स्वयं का सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष